

अध्याय ~2

वर्ण तथा उनका उच्चारण

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'भाष्' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है-बोलना।
भाषा की सार्थक इकाई वाक्य कहलाती है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी
इकाई पदबन्ध, पदबन्ध से छोटी इकाई पद (शब्द) और पद से छोटी इकाई अक्षर होती है।
भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण कहलाती है।



वर्ण एवं वर्णमाला

वर्ण

- वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खण्ड या टुकड़े नहीं किए जा सकते; जैसे—अ, ई, क, ख इत्यादि।
- उदाहरणस्वरूप मूल ध्वनियों को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है 'आम' शब्द में तीन मूल ध्वनियाँ हैं—आ + म् + अ। इन्हीं अखण्ड मूल ध्वनियों को वर्ण कहते हैं।
- प्रत्येक वर्ण की अपनी लिपि होती है। लिपि को 'वर्ण संकेत' भी कहते हैं। हिन्दी में 52 वर्ण होते हैं।

वर्णमाला

- वर्णों के व्यवस्थित समूह या समुदाय को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में वर्णों की गणना दो आधार पर की जाती है।
 - उच्चारण के आधार पर हिन्दी में उच्चारण के आधार पर वर्णों की संख्या 45 है, जिनमें 10 स्वर तथा 35 व्यंजन हैं।
 - लेखन के आधार पर लेखन के आधार पर वर्णों की संख्या 52 है, जिनमें 13 स्वर, 35 व्यंजन तथा 4 संयुक्त व्यंजन हैं।
- हिन्दी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं—स्वर तथा व्यंजन।

स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, (ऋ), ए, ऐ, ओ, औ, (अं), (अः)

[कुल 10 + 3 = 13]

व्यंजन व्यंजनों को निम्न प्रकार विभाजित किया गया है

- क वर्ग— क, ख, ग, घ, ङ
- च वर्ग— च, छ, ज, झ, ञ
- ट वर्ग— ट, ठ, ड, (ड़), ढ (ढ़) ण (ड़, ढ—द्विगुण व्यंजन)
- त वर्ग— त, थ, द, ध, न
- प वर्ग— प, फ, ब, भ, म
- अंतःस्थ व्यंजन— य, र, ल, व [कुल = 4]
- ऊष्म व्यंजन— श, ष, स, ह [कुल = 4]
- संयुक्त व्यंजन— क्ष (क् + ष), त्र (त् + र), ज्ञ (ज् + ज), श्र (श + र) [कुल = 4]

स्वर

स्वर, स्वतन्त्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण हैं। इनके उच्चारण में हवा मुख-विवर (मुख द्वार) से अबाध गति से निकलती है। इनकी संख्या 13 मानी गई है, परन्तु उच्चारण के आधार पर इनकी संख्या केवल 10 ही मानी गई है।

नोट ऋ को लिखने के आधार पर स्वर की संज्ञा दी जाती है, परन्तु इसका उच्चारण 'रि' होता है। अतः ऋ को उच्चारण के आधार पर स्वरों में स्थान नहीं दिया गया।

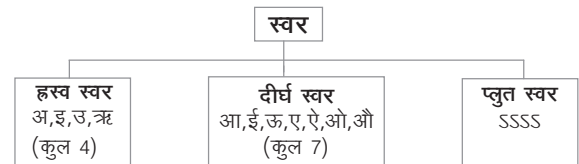
स्वरों का वर्गीकरण

स्वरों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है

- मात्रा/उच्चारण काल के आधार पर
- मुख-द्वार के खुलने के आधार पर
- जीभ के प्रयोग के आधार पर
- ओंठों की स्थिति के आधार पर
- हवा के नाक व मुँह से निकलने के आधार पर
- प्राणत्व के आधार पर
- घोषत्व के आधार पर

मात्रा/उच्चारण काल के आधार पर

मात्रा/उच्चारण के आधार पर स्वर तीन प्रकार के होते हैं



ह्रस्व/मूल स्वर वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है, मूल स्वर या ह्रस्व स्वर कहलाते हैं; जैसे—अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ स्वर जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय (दो मात्रा का समय) लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं; जैसे—आ, ई, ऊ, ऐ, ओ, औ। दीर्घ स्वरों की रचना दो स्वरों को जोड़कर होती, इसलिए इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। ये निम्न दो प्रकार के होते हैं

- सजातीय स्वर** ऐसे दीर्घ स्वर जिनका निर्माण एक ही स्थान से बोले जाने वाले स्वर के संयोग से होता है, सजातीय स्वर कहलाते हैं; जैसे—आ, ई, ऊ।
- विजातीय स्वर** ऐसे स्वर जो विभिन्न स्थानों से बोले जाने वाले स्वर के संयोग से निर्मित हुए हों, विजातीय स्वर कहलाते हैं; जैसे— ऐ, ओ, औ। इन्हें संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है।

प्लुत स्वर वे स्वर जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, प्लुत स्वर कहलाते हैं; जैसे—ओऽऽऽऽ। इन स्वरों का उपयोग मुख्यतः नाटक के संवादों में अथवा किसी को पुकारने के लिए किया जाता है।

मुख विवर (मुख द्वार) के खुलने के आधार पर

इस आधार पर स्वर चार वर्गों में विभाजित किए जा सकते हैं

विवृत जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार पूरा खुलता है; उन्हें विवृत स्वर कहते हैं; जैसे—आ।

अर्ध विवृत जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा खुलता है, उन्हें अर्ध विवृत स्वर कहते हैं; जैसे—अ, ऐ, औ, ऑ।

संवृत जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार लगभग बन्द रहता है, उन्हें संवृत स्वर कहते हैं; जैसे—इ, ई, उ, ऊ।

अर्ध संवृत जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा बन्द रहता है, उन्हें अर्ध संवृत स्वर कहते हैं; जैसे—ए, ओ।

जिह्वा (जीभ) के प्रयोग के आधार पर

इस आधार पर स्वरों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है

अग्र स्वर जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग ऊपर उठता है, वे अग्र स्वर कहलाते हैं; जैसे—इ, ई, ए, ऐ।

मध्य स्वर जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा समान अवस्था में रहती है, वे मध्य स्वर कहलाते हैं; जैसे—‘अ’।

पश्च स्वर जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग ऊपर उठता है, वे पश्च स्वर कहलाते हैं; जैसे—आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।

ओंठों की स्थिति के आधार पर

इस आधार पर स्वर दो प्रकार के होते हैं

अवृतमुखी जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ (होंठ) वृतमुखी या गोलाकार नहीं होते हैं, उन्हें अवृतमुखी स्वर कहते हैं; जैसे—अ, आ, इ, ई, ए, ऐ।

वृतमुखी जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ वृतमुखी या गोलाकार होते हैं, उन्हें वृतमुखी स्वर कहते हैं; जैसे—उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।

हवा के नाक व मुँह से निकलने के आधार पर

इस आधार पर स्वर दो प्रकार के होते हैं

निरनुनासिक या मौखिक स्वर जिन स्वरों के उच्चारण में हवा केवल मुँह से निकलती है, उन्हें निरनुनासिक या मौखिक स्वर कहते हैं; जैसे—अ, आ, इ आदि।

अनुनासिक स्वर जिन स्वरों के उच्चारण में हवा मुँह के साथ-साथ नाक से भी निकलती है, उन्हें अनुनासिक स्वर कहते हैं; जैसे—अँ, ऑ, ई आदि।

प्राणत्व के आधार पर

यहाँ प्राण का अर्थ हवा (वायु) से है। सभी स्वरों के उच्चारण में मुख से हवा कम निकलती है, इसलिए सभी स्वरों को **अल्पप्राण** माना जाता है।

घोषत्व के आधार पर

यहाँ घोष का अर्थ स्वरतन्त्रियों में श्वास के कंपन से है। स्वरों के उच्चारण से स्वरतन्त्रियों में कंपन उत्पन्न होती है, इसलिए सभी स्वर **सघोष** (Voiced) ध्वनियाँ हैं।

स्वरों का वर्गीकरण व उच्चारण स्थान

वर्णनाम	उच्चारण स्थान	ह्रस्व स्वर	दीर्घ स्वर	निरानुनासिक /मौखिक स्वर	अनुनासिक
कण्ठ्य	कण्ठ	अ	आ	अ, आ	अँ, ऑ
तालव्य	तालु	इ	ई	इ	ईँ
मूर्धन्य	मूर्धा	ऋ			
ओष्ठ्य	ओष्ठ/ओंठ	उ	ऊ		
कण्ठतालव्य	कण्ठ + तालु		ए, ऐ		
कण्ठोष्ठ्य	कण्ठ + ओष्ठ		ओ, औ		

अयोगवाह

- **अनुस्वार** (ँ) और **विसर्ग** (:) ऐसी ध्वनियाँ हैं, जो न स्वर हैं और न ही व्यंजन। आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने इन्हें अयोगवाह कहा है, क्योंकि ये बिना किसी से योग किए ही अर्थ वहन करते हैं। हिन्दी वर्णमाला में इनका स्थान स्वरों के बाद और व्यंजनों से पहले निर्धारित किया गया है।
- अनुस्वार को ‘शीर्ष बिन्दु वाला वर्ण’ तथा विसर्ग को ‘पार्श्व बिन्दु वाला वर्ण’ भी कहते हैं। परम्परा के अनुसार, अनुस्वार व विसर्ग को स्वरों के साथ रखा जाता है, लेकिन ये स्वर ध्वनियाँ नहीं हैं, क्योंकि इनका उच्चारण व्यंजनों के उच्चारण की तरह ‘अ’ स्वर की सहायता से होता है। इनमें अन्तर इतना है कि व्यंजन में स्वर पीछे आता है (क + अ = क) तथा इन दोनों में स्वर पहले आता है (अ + ँ = अँ, अ + : = अः)।
- इन दोनों वर्णों का जातीय योग न तो स्वर के साथ बैठता है और न ही व्यंजन के साथ। यही कारण है कि इन्हें अयोग कहा जाता है। ये अपना अलग अर्थ वहन करते हैं, इसलिए अयोगवाह कहलाते हैं।

मध्यान्तर प्रश्नावली

- वर्णमाला किसे कहते हैं?
(a) शब्द समूह को (b) वर्णों के संकलन को
(c) शब्द गणना को (d) वर्णों के व्यवस्थित समूह को
- उच्चारण के आधार पर वर्णों की संख्या कितनी है?
(a) 45 (b) 48 (c) 50 (d) 52
- स्वरों के वर्गीकरण के कितने प्रकार हैं?
(a) दो (b) तीन (c) चार (d) सात
- ओ, औ किस प्रकार की ध्वनियाँ हैं?
(a) ओष्ठ्य (b) तालव्य
(c) कण्ठोष्ठ्य (d) कण्ठतालव्य
- निम्नलिखित में से कौन सा वर्ण संयुक्त स्वर के अन्तर्गत आता है?
(a) ऊ (b) औ (c) ई (d) ऋ
- हिन्दी में दीर्घ स्वरों की संख्या कितनी है?
(a) दो (b) पाँच
(c) सात (d) नौ
- जिन स्वरों के उच्चारण में मुख विवर (मुख द्वार) बन्द रहता है, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) संवृत (b) अर्द्धसंवृत
(c) विवृत (d) अर्द्धविवृत
- निम्नलिखित में से कौन-सा वर्ण विवृत स्वर है?
(a) ओ (b) ऊ (c) ए (d) आ
- निम्नलिखित में से कौन-सा स्वर अवृतमुखी स्वर है?
(a) ऊ (b) ओ (c) अ (d) ओँ
- जिन स्वरों के उच्चारण में हवा मुँह के साथ-साथ नाक से भी निकलती है, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) अनुनासिक (b) निरनुनासिक
(c) वृतमुखी (d) अर्द्ध संवृत

उत्तरमाला

- (d)
- (a)
- (d)
- (c)
- (b)
- (c)
- (a)
- (d)
- (c)
- (a)

व्यंजन

- वे ध्वनियाँ जो बिना स्वरों की सहायता के उच्चरित नहीं हो सकती हैं, व्यंजन कहलाती हैं; जैसे—क = क् + अ, ख = ख् + अ।
- अन्य शब्दों में, जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा मुख-द्वार से अबाध गति से नहीं निकलती, वरन् उसमें पूर्ण या अपूर्ण अवरोध होता है, व्यंजन कहलाती हैं।
- जब व्यंजनों के नीचे हलन्त का चिन्ह (्) लगता है, तब वह व्यंजन आधा होता है।
- व्यंजनों का उच्चारण 'अ' के बिना संभव नहीं है। इसलिए प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण के अंत में 'अ' स्वर आता है।
- इनकी संख्या 33 मानी गयी है, परन्तु 'ड़', 'ढ़' (द्विगुण व्यंजन) जुड़ने पर इनकी संख्या 35 हो जाती है।

व्यंजनों का वर्गीकरण निम्न इस प्रकार है

प्रयत्न स्थान (उच्चारण स्थान) के आधार पर

- कण्ठ्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा के पिछले भाग से कोमल तालु का स्पर्श होता है, कण्ठ्य ध्वनियाँ (व्यंजन) कहलाती हैं; जैसे—क, ख, ग, घ, ङ।
- तालव्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग कठोर तालु को स्पर्श करता है, तालव्य व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—च, छ, ज, क्ष, ञ और श, य।
- मूर्धन्य व्यंजन** कठोर तालु के मध्य का भाग मूर्धा कहलाता है। जब जिह्वा की उल्टी हुई नोक का निचला भाग मूर्धा से स्पर्श करता है, ऐसी स्थिति में उत्पन्न ध्वनि को मूर्धन्य व्यंजन कहते हैं; जैसे—ट, ठ, ड, ढ, ण, भ।
- दन्त्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक ऊपरी दाँतों को स्पर्श करती है, दन्त्य व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—त, थ, द, ध, स।
- ओष्ठ्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में दोनों ओष्ठों द्वारा श्वास का अवरोध होता है, ओष्ठ्य व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—प, फ, ब, भ, म।
- दन्त्योष्ठ्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में दोनों ओष्ठ दाँतों को स्पर्श करता है, दन्त्योष्ठ्य व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—व।
- वर्त्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा ऊपरी मसूढ़ों (वर्त्स) को स्पर्श करती है, वर्त्य व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—न, र, ल।

प्रयत्न विधि के आधार पर

- स्पर्श व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का कोई-न-कोई भाग मुख के किसी-न-किसी भाग को स्पर्श करता है, स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। क से लेकर म तक 25 व्यंजन स्पर्श हैं। इन्हें पाँच-पाँच के वर्गों में विभाजित किया गया है। अतः इन्हें **वर्गीय व्यंजन** भी कहते हैं।
- स्पर्श संघर्षी व्यंजन** 'च' वर्ग के उच्चारण में वायु कुछ घर्षण के साथ निकलती है, इसलिए इस वर्ग के व्यंजनों को (च, छ, ज, झ, ञ) स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
- नासिक्य व्यंजन** ङ, ज, ण, न तथा म व्यंजनों के उच्चारण में वायु नाक से निकलती है, इसलिए इन्हें नासिक्य या अनुनासिक व्यंजन कहते हैं।

- उत्क्षिप्त व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ सबसे पहले ऊपर उठकर मूर्धा को छूती है, उसके बाद झटके से नीचे आ जाती है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ङ, ढ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं। ये व्यंजन संस्कृत में नहीं थे।
- लुण्ठित व्यंजन** इन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ तालु से लुढ़ककर स्पर्श करती है; जैसे—'र'।
- पार्श्विक व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ तालु को छुए, किन्तु पार्श्व (बगल) में से हवा निकल जाए, उन्हें पार्श्विक व्यंजन कहते हैं; जैसे—'ल'।
- अन्तःस्थ व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख बहुत संकुचित हो जाता है फिर भी वायु स्वरों की भाँति बीच से निकल जाती है, उस समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है; जैसे—य, र, ल, वा।
- ऊष्म व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में एक प्रकार की गरमाहट या सुरसुराहट-सी प्रतीत होती है, ऊष्म (संघर्षी) व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—श, ष, स और ह।
- स्वरयन्त्रमुखी या काकल्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में अन्दर से आती हुई श्वास, तीव्र वेग से स्वर यन्त्र मुख पर संघर्ष उत्पन्न करती है, स्वरयन्त्रमुखी व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—'ह'।

प्राणत्व के आधार पर

- अल्पप्राण** जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से कम हवा निकले, अल्पप्राण व्यंजन होते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन वर्ण अल्पप्राण ध्वनि होता है; जैसे—क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, ङ आदि।
- महाप्राण** जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकले, वे महाप्राण व्यंजन होते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा व्यंजन वर्ण महाप्राण ध्वनि होता है; जैसे—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ, श, ष, स, ह आदि।

घोषत्व के आधार पर

- अघोष व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतन्त्रियों में कम्पन न हो, अघोष व्यंजन कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला तथा दूसरा व्यंजन (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ) और श, ष, स अघोष व्यंजन होते हैं।
- सघोष व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतन्त्रियों में कम्पन हो, सघोष या घोष व्यंजन कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ व्यंजन (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म), ङ, ढ तथा य, र, ल, व, ह सघोष व्यंजन होते हैं।

द्वित्व व्यंजन

- जब एक ही व्यंजन वर्ण को दो बार प्रयोग किया जाता है, तब उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं; जैसे—

क् + क	=	क्क	—	पक्का, चक्का,
च् + च	=	च्च	—	सच्चा, बच्चा
ङ् + ङ	=	ङ्ङ	—	गुङ्ग, गुङ्गा
त् + त	=	त्त	—	सत्ता, कुत्ता
न् + न	=	न्न	—	मुन्नी, सुन्नी
स् + स	=	स्सा	—	रस्सी, गुस्सा

उच्चारण की दृष्टि से ध्वनियाँ

1. **संयुक्त ध्वनि** दो-या-दो से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ परस्पर संयुक्त होकर संयुक्त ध्वनियाँ कहलाती हैं; जैसे—प्राण, घ्राण, कलान्त आदि। ये ध्वनियाँ अधिकतर तत्सम शब्दों में पाई जाती हैं।
2. **सम्पृक्त ध्वनि** जब एक ध्वनि दो ध्वनियों से जुड़ी होती है, तब यह 'सम्पृक्त ध्वनि' कहलाती है; जैसे—'सम्बल'। यहाँ 'स' और 'ब' ध्वनियों के साथ 'म्' ध्वनि जुड़ी है।
3. **युग्मक ध्वनि** जब एक ही ध्वनि द्वित्व हो जाए, तब यह युग्मक ध्वनि कहलाती है; जैसे—अक्षुण्ण, प्रफुल्ल, प्रसन्नता आदि।

व्यंजनों का वर्गीकरण व उच्चारण स्थान

वर्ग नाम	उच्चारण स्थान	अघोष अल्पप्राण	अघोष महाप्राण	सघोष अल्पप्राण	सघोष महाप्राण	सघोष अल्पप्राण
कण्ठ्य	कण्ठ	क	ख	ग	घ	ङ
तालव्य	तालु (मुँह के भीतर की ऊपर वाली छत का पिछला भाग)	च	छ	ज, झ	झ	ञ
मूर्धन्य	मूर्धा मुँह के भीतर की ऊपर वाली छत का अगला भाग	ट	ठ, ढ	ड	ढ, ढ	ण
दन्त्य	दाँत	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	ओष्ठ/ओँठ	प	फ, भ	ब	भ	म

आगत/गृहीत ध्वनियाँ

हिन्दी में अंग्रेजी तथा उर्दू (अरबी-फारसी) भाषा के शब्द भी प्रयोग किए जाते हैं, इन्हें आगत/गृहीत ध्वनियाँ कहा जाता है, क्योंकि ये ध्वनियाँ हिन्दी वर्णमाला में विदेशी भाषा से सम्मिलित हुई हैं।

आगत/गृहीत ध्वनियों का वर्गीकरण

वर्ण	उच्चारण स्थान	घोषत्व/प्राणत्व
क (स्पर्शी)	कण्ठ + जिह्वामूल	अघोष, अल्पप्राण
ख (ऊष्म/संघर्षी)	कण्ठ + जिह्वामूल	अघोष, महाप्राण
ग (ऊष्म/संघर्षी)	कण्ठ + जिह्वामूल	सघोष, अल्पप्राण
ज (ऊष्म/संघर्षी)	वत्सर्ग	सघोष, अल्पप्राण
फ (ऊष्म/संघर्षी)	दंतोष्ठ्य	अघोष, महाप्राण

अंग्रेजी भाषा से आगत ध्वनियाँ

- अंग्रेजी भाषा से आगत ध्वनि **अर्धचन्द्राकार** (˘) होती है।
- हिन्दी भाषा में अंग्रेजी भाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनमें कुछ शब्दों में प्रयोग होने वाली ध्वनि हिन्दी से भिन्न है। यह ध्वनि **ऑ** है, जो हिन्दी की 'आ' तथा 'ओ' के बीच की ध्वनि है। इसलिए हिन्दी में इसके शुद्ध उच्चारण तथा लेखन के लिए अर्धचन्द्राकार (˘) नामक चिह्न विकसित किया गया है।
- 'ऑ' ध्वनि निर्मित शब्द निम्नलिखित हैं; जैसे—बॉल (गेंद), हॉट (गर्म), कॉफी (पेय पदार्थ), डॉक्टर (चिकित्सक)

अरबी-फारसी/नुक्ते (तल बिन्दु) ध्वनियाँ

- उर्दू की अरबी-फारसी भाषा से नुक्ते वाली ध्वनियाँ आती हैं; जैसे—'अ', क़, ख़, ग़, फ़,' जो हिन्दी में भी प्रयुक्त होने लगी हैं। अरबी-फारसी नुक्ते वाले कुछ शब्द इस प्रकार हैं
अ— अज़ब, अक्स, अदालत आदि।
क़— कुरबान, क़ैद, वक्त्र, बाक़ी, मजाक़, क़हर, फ़र्क़ आदि।

ख़— ख़याल, ख़ातून, तनख़्वाह, दाख़िल, सख़्त, तारीख़ आदि।
ग़— ग़जल, ग़लत, नग़मा, दिमाग़, सुराग़, बालिग़, बग़ैर आदि।
ज़— ज़हीन, ज़ेहन, औज़ार, महाज़, आज़ादी, मज़दूर आदि।
फ़— फ़तह, फ़ना, फ़ौलाद, फ़ुसत, नफ़रत, फ़ौजी, फ़ौरन आदि।
• अंग्रेजी के (F) 'फ़' तथा (Z) 'ज़' ध्वनियों के वर्णों में नुक्ते का प्रयोग होता है; जैसे—Father (फ़ादर), Film (फ़िल्म), Form (फ़ॉर्म), Zero (ज़ीरो), Zinc (ज़िंक), Zoo (ज़ू) आदि।

शब्दकोश में प्रयुक्त वर्णानुक्रम सम्बन्धित नियम

- शब्दकोश में पहले स्वर उसके पश्चात् व्यंजन का क्रम आता है।
- शब्दकोश में **अनुस्वार** (◌ं) और **विसर्ग** (◌ः) का स्वतन्त्र वर्ण के रूप में प्रयोग नहीं होता, लेकिन संयुक्त वर्णों के रूप में इन्हें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि से पहले स्थान प्रदान किया जाता है; जैसे—
कं, कः, क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ।
- शब्दकोश में पूर्ण वर्ण के पश्चात् **संयुक्ताक्षर** का क्रम आता है; जैसे—
कं, कः को, कौ के पश्चात् क्य, क्र, क्ल, क्व, क्ष।
- शब्दकोश में 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' का कोई पृथक् शब्द संग्रह नहीं मिलता, क्योंकि ये संयुक्ताक्षर होते हैं।
- इनसे सम्बन्धित शब्दों को ढूँढ़ने हेतु इन संयुक्ताक्षरों के पहले वर्ण वाले खाने में देखना होता है; जैसे—यदि हमें 'क्ष' (क् + ष) से सम्बन्धित शब्द को ढूँढ़ना है, तो हमें 'क' वाले खाने में जाना होगा। इसी तरह 'त्र' (त् + र), 'ज्ञ' (ज् + ञ), श्र (श् + र) के लिए क्रमशः 'त', 'ज' और 'श' वाले खाने में जाना पड़ेगा।
- ड, ज, ण, ङ, ढ से कोई शब्द आरम्भ नहीं होता, इसलिए ये स्वतन्त्र रूप से शब्दकोश में नहीं मिलते।

मध्यान्तर प्रश्नावली

1. सामान्यतः व्यंजन कितने होते हैं?
(a) 30 (b) 35 (c) 40 (d) 45
2. स्पर्श व्यंजन को.....भी कहा जाता है।
(a) अन्तःस्थ व्यंजन (b) वर्गीय व्यंजन
(c) मूल व्यंजन (d) अन्य व्यंजन
3. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यंजन लुटित है?
(a) य (b) ल (c) र (d) ढ
4. निम्नलिखित में से पार्श्विक व्यंजन का चयन कीजिए।
(a) ङ (b) र (c) ह (d) ल
5. 'ध' व्यंजन का उच्चारण स्थान क्या है?
(a) मूर्धन्य (b) तालव्य (c) दन्त्य (d) ओष्ठ्य
6. प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा व्यंजन क्या कहलाता है?
(a) अघोष (b) अल्पप्राण (c) सघोष (d) महाप्राण
7. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यंजन अघोष है?
(a) ग (b) त (c) ज (d) ढ

उत्तरमाला

1. (b)
2. (b)
3. (c)
4. (d)
5. (a)
6. (d)
7. (b)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. 'लिपि-चिह्न' के क्रमबद्ध समूह को क्या कहते हैं?
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
(a) अक्षर (b) वर्ण (c) वर्ण-समूह (d) वर्णमाला
2. कौन-सा अमानक वर्ण है?
(a) ख (b) घ (c) झ (d) भ
3. 'वर्ण' किसे कहते हैं?
(a) यह भाषा की सबसे बड़ी इकाई होती है
(b) यह भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है
(c) इसके खण्ड हो सकते हैं
(d) इनमें से कोई नहीं
4. लेखन के आधार पर वर्णों की संख्या कितनी है?
(a) 44 (b) 55 (c) 48 (d) 52
5. हिन्दी में मूलतः कितने वर्ण हैं?
(a) 52 (b) 50 (c) 40 (d) 55
6. संयुक्त को छोड़कर हिन्दी में मूल वर्णों की संख्या है
(a) 36 (b) 44 (c) 48 (d) 53
7. हिन्दी में व्यंजन वर्णों की संख्या है
(a) 28 (b) 30 (c) 32 (d) 35
8. हिन्दी में ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती हैं?
(a) 2 (b) 4 (c) 6 (d) 8
9. स्वर कहते हैं
(a) जिनका उच्चारण 'लघु' और 'गुरु' में होता है
(b) जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्न-बाधा के होता है
(c) जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है
(d) जिनका उच्चारण नाक और मुँह से होता है
10. हिन्दी भाषा में वे कौन-सी ध्वनियाँ हैं, जो स्वतन्त्र रूप से बोली या लिखी जाती हैं?
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) स्वर (b) व्यंजन (c) वर्ण (d) अक्षर
11. भाषा-विज्ञान की दृष्टि से 'ऊ' किस प्रकार का स्वर है?
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
(a) अग्र संवृत (b) अग्र विवृत (c) पश्च संवृत (d) पश्च विवृत
12. 'ए' स्वर का प्रकार है
(CGPSC Pre 2019)
(a) ह्रस्व स्वर (b) दीर्घ स्वर (c) मूल स्वर (d) संयुक्त स्वर
13. हिन्दी भाषा में 'ह्रस्व स्वरों' की संख्या कितनी है?
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
(a) ग्यारह (b) चार (c) तीन (d) दो
14. प्लुत स्वर कौन-सा है?
(UPTET 2020)
(a) ओउम् (b) अउम (c) ओम (d) ओम्
15. मात्रा के आधार पर स्वर कितने प्रकार के होते हैं? (UPSSSC VDO 2018)
(a) 2 (b) 3 (c) 4 (d) 5
16. जिह्वा के आधार पर स्वर कितने प्रकार के होते हैं? (UPSSSC VDO 2018)
(a) 2 (b) 3 (c) 4 (d) 6
17. निम्नलिखित में से कौन-सा अग्र स्वर नहीं है?
(a) अ (b) इ (c) ए (d) ऐ
18. हिन्दी में स्वरों के कितने प्रकार हैं?
(a) 1 (b) 2 (c) 3 (d) 4
19. हिन्दी वर्णमाला में 'अ' और 'अः' क्या हैं?
(UGC Net/JRF 2012)
(a) स्वर (b) व्यंजन (c) अयोगवाह (d) संयुक्ताक्षर
20. जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, वे कहलाते हैं
(a) मूल स्वर (b) प्लुत स्वर (c) संयुक्त स्वर (d) अयोगवाह
21. निम्नलिखित में से कौन स्वर नहीं है?
(उत्तराखण्ड पुलिस उपनिरीक्षक परीक्षा 2014)
(a) अ (b) उ (c) ए (d) ज
22. उच्चारण के समय जीभ की स्थिति के अनुसार स्वरों के कितने भेद किए गए हैं?
(UP TGT परीक्षा 2003)
(a) दो (b) तीन (c) पाँच (d) सात
23. भिन्न-भिन्न स्वरों के मेल से जो स्वर उत्पन्न होता है, उसे
(CGTET 2011)
(a) संयुक्त स्वर (b) दीर्घ स्वर (c) सन्धि स्वर (d) मूल स्वर
24. 'स्वर' किसका भेद है?
(UPTET 2018)
(a) सन्धि (b) समास (c) वर्ण (d) लिंग
25. किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?
(REET 2011)
(a) कृपा (b) कृष्ण (c) दृष्टि (d) रिवाज
26. अयोगवाह कहा जाता है
(UPTET 2016, 17)
(a) महाप्राण को (b) अनुस्वार एवं विसर्ग को
(c) संयुक्त व्यंजन को (d) अल्पप्राण को
27. 'ए' तथा 'ऐ' वर्ण क्या कहलाते हैं?
(UPTET 2016, 17)
(a) ओष्ठ्य (b) मूर्धन्य (c) कण्ठ-तालव्य (d) नासिक्य
28. वे ध्वनियाँ जो स्वरों की सहायता के बिना उच्चरित नहीं हो सकतीं; क्या कहलाती हैं?
(a) स्वर (b) शब्द (c) व्यंजन (d) संयुक्ताक्षर
29. निम्नलिखित में से कौन वर्ण अन्तःस्थ नहीं है?
(UPPSC Pre 2016)
(a) य (b) ह (c) र (d) व
30. उच्चारण स्थान की दृष्टि से कौन-सा विकल्प शुद्ध है?
(UPTET 2020)
(a) स-दन्त्य (b) श-मूर्धन्य (c) ष-तालव्य (d) च-कण्ठ्य
31. निम्नलिखित में कौन-सा कथन अशुद्ध है?
(UPTET 2020)
(a) हिन्दी में झ का उच्चारण परम्परा से भिन्न हो गया है
(b) दो महाप्राण व्यंजनों का उच्चारण एक साथ हो सकता है
(c) विसर्ग कण्ठ्य वर्ण है
(d) 'क्ष' संयुक्त व्यंजन है
32. निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(UPTET 2020)
I. अनुस्वार पूर्ण अनुनासिक ध्वनि है।
II. वर्ग का पंचमाक्षर अनुनासिक होता है।
III. अनुनासिक के उच्चारण के दौरान नाक से बहुत कम साँस निकलती है और मुँह से अधिका
कूट
(a) केवल III (b) केवल I (c) I और II (d) I, II और III
33. दाँत और जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण को क्या कहते हैं?
(UPTET 2020)
(a) मूर्धन्य (b) कण्ठोष्ठ्य (c) दन्तोष्ठ्य (d) दन्त्य

